

## रामायण में राम-शबरी प्रसंग - तुलनात्मक समीक्षा

डॉ. ममता गुप्ता

सहायक प्राध्यापक, संस्कृत

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एकसीलेस शास. महाकौशल महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

e-mail- drmamtagupta10@gmail.com

### सार) Abstract) —

रामायण ऐसी लोकप्रियतम कथा जो जनसाधारण और बुद्धिजीवियों दोनों वर्गों में समान रूप से लोकप्रिय है। संस्कृत साहित्य में रामकथा को आधार बना कर लिखे गये काव्यों की सुदीर्घ परम्परा है जो अनेक भाषाओं में रचे गए हैं। रामायणों की लोकप्रियता का कारण काव्य सौंदर्य न होकर रामकथा की उदात्तता है। राम कथा में अनेक हृदयस्पर्शी प्रसङ्ग हैं जिनमें से एक प्रसङ्ग है राम और शबरी का प्रसङ्ग। विभिन्न रामायणों में वर्णित राम-शबरी का प्रसङ्ग का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत लेख का विषय है।

### पद्धति (Methodology)-

शोधपत्र लेखन के लिए वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध प्रविधि (Research Methodology) का प्रयोग किया जाएगा। इस हेतु विभिन्न भाषाओं की रामायणों एवं आलोचनात्मक ग्रन्थों का अध्ययन करके सन्दर्भों का संकलन किया जाएगा और उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन शोध पत्र में प्रस्तुत किया जाएगा।

**कुञ्जी शब्द) Key Words) —** वाल्मीकि-रामायण, अध्यात्म रामायण, कृतिवास-रामायण, कम्ब-रामायण, रंगनाथ-रामायण, रामचरितमानस।

### प्रस्तावना(introduction) —

रामायण लौकिक साहित्य की प्राचीनतम कृति है। परस्पर प्रेम निमग्न क्रौञ्च-मिथुन में से एक को व्याध के द्वारा मारे जाने पर महर्षि वाल्मीकि के हृदय की जो पीड़ा श्लोक रूप में प्रस्फुटित हुई थी उसी का पल्लवित रूप है रामायण। निःसन्देह रामायण एक अनुपम रचना है। रामकथा सहस्राब्दियों से भारतीय संस्कृति को प्रभावित करती रही है। इसने जनसाधारण और बुद्धिजीवियों दोनों पर समान रूप से प्रभाव डाला है। यही कारण है कि रामायण एक ओर तो प्रत्येक भारतीय के लिए धार्मिक आस्था केन्द्र है तो दूसरी ओर कवियों और नाटककारों के लिए प्रेरणा का स्रोत।

संस्कृत साहित्य में रामकथा को आधार बना कर लिखे गये काव्यों की सुदीर्घ परम्परा है जो आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है। काव्य की लगभग समस्त विधाओं में रामकथा का संकीर्तन किया गया है। वस्तुतः भारतीय परिदृश्य में रामकथा पर लेखनी चलाए बिना कोई कवि प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होता है। संस्कृत वाङ्मय में ही नहीं पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, अंग्रेजी इत्यादि प्रायः सभी भाषाओं में रामकथा का भिन्न-भिन्न रूपों में वर्णन मिलता है। संस्कृत में रचित वाल्मीकि-रामायण, अध्यात्म-रामायण, बांग्ला में रचित कृतिवास-रामायण, तेलुगु में रचित कम्ब-रामायण, अपभ्रंश में रचित पउमचरिउ, हिन्दी में तुलसीदास कृत रामचरितमानस अत्यन्त लोकप्रिय हैं। विभिन्न भाषाओं में लिखी गई इन रामायणों की लोकप्रियता का कारण इनका काव्य सौंदर्य मात्र नहीं अपितु रामकथा की महनीयता है। रामायण में वर्णित राम एवं शबरी के मध्य हुए संवाद का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत लेख का विषय है। संवाद शब्द सम उपसर्ग पूर्वक वद धातु के साथ घञ् प्रत्यय करने से निष्पन्न होता है इसके अनेक अर्थ बताए गए हैं—

**संदेशवाक्य, वाचिक, संदेशवाक्, मिथसमाभाषण**

उनमें से यहाँ मिथ-वार्तालाप यानी परस्पर वार्तालाप अपेक्षित है। संस्कृत साहित्य में संवादों का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। सर्वप्रथम हमें ऋग्वेद में अनेक संवाद -सूक्त देखने को मिलते हैं जो अपने काव्यसौंदर्य एवं लालित्य के कारण प्रसिद्ध हैं। रामायण में भी अनेक संवाद हैं यथा नारद-वाल्मीकि-संवाद, परशुराम-लक्ष्मण-संवाद, राम-रावण-संवाद, रावण-मंदोदरी-संवाद, विभीषण-रावण संवाद आदि। मेरे द्वारा इस शोधपत्र में राम-शबरी-संवाद को ग्रहण किया गया है। वाल्मीकि रामायण में राम-शबरी का प्रसङ्ग केवल एक सर्ग में वर्णित है परन्तु परवर्ती रामकथाओं में इसका विस्तार से वर्णन किया गया है। राम-शबरी संवाद का तुलनात्मक अध्ययन इस शोधपत्र का प्रमुख प्रतिपाद्य है। तुलनात्मक अध्ययन हेतु वाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त अध्यात्म रामायण, कृतिवास-रामायण, कम्ब-रामायण, रंगनाथ-रामायण एवं रामचरितमानस को विशेष रूप से ग्रहण किया गया है। रामकथा के प्रतिपादक इन सभी ग्रन्थों में वर्णित राम-शबरी-संवाद में परस्पर समानता के साथ असमानता भी दृष्टिगोचर होती है।

### चर्चा(Discussion)-

रामकथा सर्वविदित है। श्रीराम को अपने पिता के वचनों के अनुसार चौदह वर्ष का वनवास प्राप्त हुआ था। चौदहवर्ष के वनवास की अवधि में उनका अनेक ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों, वनवासियों से सम्पर्क हुआ। शबरी भी उन वनवासियों में से एक थीं। वाल्मीकि रामायण के अरण्यकाण्ड के चौहत्तरवें में सर्ग में राम शबरी के संवाद प्राप्त होता है। सीता की खोज में गहन वन में भटकते हुए राम की कबन्धरूपधारी शापित यक्ष से भेंट होती है जो शाप के कारण विकृत रूप में है। राम द्वारा वध किए जाने पर शापमुक्त कबन्ध राम को शबरी के विषय में बताता है। वह शबरी का परिचय देते हुए कहता है कि वह मतङ्ग ऋषि की शिष्या है। यहाँ से आगे पम्पा सरोवर के पश्चिम में मतङ्ग-वन है। जहाँ पर मतङ्ग ऋषि के प्रभाव से कभी न नष्ट होने वाले फूल उत्पन्न होते थे। इस समय मतङ्ग ऋषि एवं उनके सभी शिष्य दिव्यलोक चले गए हैं किंतु उनकी सेवा में रहने वाली तपस्विनी शबरी आज भी वहाँ निवास कर रही है। वह चिरजीवनी हो करके धार्मिक अनुष्ठान में लगी रहती है। नित्यवन्दनीया शबरी आपके दर्शन करके स्वर्ग लोक में चली जाएगी-

**मतङ्गशिष्यास्तत्रासन्नृषयः सुसमाहिताः॥**

**तेषां भाराभितप्तानां वन्यमाहरतां गुरोः।**

**ये प्रपेतुर्महीं तूर्णं शरीरात् स्वेदबिन्दवः॥**

**तानि माल्यानि जातानि मुनीनां तपसा तदा।**

**स्वेदबिन्दुसमुत्थानि न विनश्यन्ति राघवा॥**

कबन्ध के कथनानुसार राम और लक्ष्मण पम्पा सरोवर के पश्चिमी तट पर स्थित शबरी के आश्रम में पहुँचते हैं जो अत्यन्त सुरम्य फल, फूल और मधु से सम्पन्न वृक्षों से घिरा हुआ है। उन दोनों भाइयों को अपने आश्रम में आया देखकर शबरी ने उनके चरणों में प्रणाम करके उनकी अभ्यर्थना की तथा अर्घ्य, पाद, अचमन आदि सामग्रियों द्वारा उनका विधिवत् सत्कार किया। इसके पश्चात् राम और शबरी के मध्य वार्तालाप होता है-

**तामुवाच ततो रामः श्रमणीं शंसितव्रताम् ॥**

कच्चित्ते निर्जिता विघ्नाः कच्चित्त्वे वर्धते तपः ।  
कच्चित्ते नियतः क्रोध आहारश्च तपोधने।।  
कच्चित्ते नियमाः प्राप्ताः कच्चित्ते मनसः सुखम् ॥  
कच्चित्ते गुरुशुश्रूषा सफला चारुभाषिणि।।

राम उसे धर्मपरायणा तपस्विनी से बोले- तपोधने, क्या तुमने सारे विघ्नों पर विजय प्राप्त कर ली है, क्या तुम्हारी तपस्या बढ़ रही है, क्या तुमने क्रोध और आहार तुम्हारे वश में है, क्या तुमने नियमों को प्राप्त कर लिया है, क्या तुम्हारे मन में सुख है, क्या तुम्हारी गुरुसेवा सफल हो गई है?

राम के द्वारा इस प्रकार पूछने पर उस सिद्धों में सम्मानित सिद्धा तपस्विनी ने उत्तर दिया- आज आपके दर्शन से मुझे तपस्या की सिद्धि प्राप्त हो गई है, आज मेरी गुरुजनों की उत्तम पूजा सफल हो गई है। आज मेरा जन्म सफल हो गया है, अब मुझे स्वर्ग की प्राप्ति होगी है। आपकी सौम्य दृष्टि से मैं पवित्र हो गई हूँ आपके प्रसाद से ही मैं अक्षय लोकों को प्राप्त होऊँगी।

जब आप चित्रकूट पधारे थे, उसी समय मेरे गुरुजन महान् विमान पर बैठकर दिव्य लोक में चले गए उन महर्षियों ने जाते समय मुझे से कहा था कि इस परम पवित्र आश्रम पर श्री राम पधारेंगे। लक्ष्मण के साथ वे तुम्हारे अतिथि होंगे तुम उनका यथावत् सत्कार करना। उनका दर्शन प्राप्त करके तुम श्रेष्ठ और अक्षय लोकों प्राप्त होगी।

रामेण तापसी पृष्टा सा सिद्धा सिद्धसंमता।  
शशंस शबरी वृद्धा रामाय प्रत्युपस्थिता।।  
अद्य प्राप्ता तपः सिद्धिस्तव सन्दर्शान्मया।  
अद्य मे सफलं तप्तं गुरवश्च सुपूजिताः॥  
अद्य मे सफलं जन्म स्वर्गश्चैव भविष्यति ॥  
त्वयि देववरे राम पूजिते पुरुषर्षभ।।  
चक्षुषा तव सौम्येन पूताऽस्मि रघुनन्दन ।  
गमिष्याम्यक्षया लोकांस्त्वत्प्रसादादरिन्दम।।  
चित्रकूटं त्वयि प्राप्ते विमानैरतुलप्रभैः।  
इतस्ते दिवमारूढा यानहं पर्यचारिषम।।  
तैश्चाहमक्ता धर्मजैर्महाभागैर्महर्षिभिः।  
आगमिष्यति ते रामः सुपण्यमिममाश्रमम्।।  
से ते प्रतिग्रहीतव्यः सौमित्रिसहितोऽतिथिः।  
तं च दृष्ट्वा वराल्लोकानक्षयांस्त्वं गमिष्यसि।।

शबरी ने राम के आने की प्रतीक्षा में पम्पा सरोवर पर उत्पन्न होने वाले नाना प्रकार के वन्य फल फूलों का संचय किया था। उसने उन फलों को श्री रामचंद्र जी को समर्पित किया-

मया तु विविधं वन्यं संचितं पुरुषर्षभ।।  
तवार्थं पुरुषव्याघ्र पम्पायास्तीरसंभवम्।।  
एवमुक्तः स धर्मात्मा शबर्या शबरीमिदम् ॥

उसकी बातें सुनकर के राम ने उसे तपोधने कह कर सम्बोधित करते हुए कहा- मैंने कबन्ध के मुख से तुम्हारे महात्मा गुरुजनों का यथार्थ प्रभाव सुना है यदि तुम स्वीकार करो तो मैं उनके प्रभाव को प्रत्यक्ष देखना चाहता हूँ -

शबरी ने उन दोनों भाइयों को मतङ्गवन नामक से प्रसिद्ध महान वन के दर्शन कराए। जहाँ मतङ्ग मुनि ने गायत्री मन्त्र के जाप से विशुद्ध हुई अपनी देह को अग्नि में समर्पित किया था। यहीं पर वृद्धावस्था के कारण जब महर्षि अशक्त हो गए थे तब उन्होंने चिन्तन मात्र से सात समुद्र का जल प्रकट करके किया था वही आज सप्तसागर के रूप में यहाँ पर स्थित है। इसीप्रकार शबरी ने आश्रम के अनेक स्थानों का राम और लक्ष्मण को दर्शन कराया-

राघवः प्राह विज्ञाने तां नित्यमबहिष्कृताम् ॥  
दनोः सकाशात्तत्त्वेन प्रभावं ते महात्मनाम् ।

श्रुतं प्रत्यक्षमिच्छामि सन्दृष्टुं यदि मन्यसे ॥  
एतत्तु वचनं श्रुत्वा रामवक्त्रविनिसृतम् ।  
शबरी दर्शयामास तावुभौ तद्वनं महत् ॥  
पश्य मेघघनप्रख्यं मृगपक्षिसमाकुलम् ।  
मतङ्गवनमित्येव विश्रुतं रघुनन्दन ॥  
इह ते भावितात्मानो गुरवो मे महाद्युते ।  
जुहवांचक्रिरे तीर्थ मन्त्रवन्मन्त्रपूजितम् ॥  
इयं प्रत्यक्स्थली वेदिर्यत्र ते मे ससत्कृताः ।  
पुष्पोपहारं कुर्वन्ति श्रमादुद्वेपिभिः करैः ॥  
तेषां तपःप्रभावेन पश्याद्यापि रघुत्तम ।  
द्योतयन्ति दिशः सर्वाः श्रिया वेद्यतुलप्रभाः ॥  
अशक्नुवद्विस्तैर्गन्तुमुपवासश्रमालसैः ।  
चिन्तितेऽभ्यागतान्पश्य सहितान्सप्त सागरान् ॥  
कृताभिषेकैस्तैयस्ता वल्कलाः पादपेष्विह ॥  
अद्यापि न विशुष्यन्ति प्रदेशे रघुनन्दन ॥  
देवकार्याणि कुर्वन्निर्द्विर्नीमानि कृतानि वै ।  
पुष्पैः कुवल्यैः सार्धं म्लानत्व नोपयान्ति वै ॥  
कृत्स्नं वनमिदं दृष्टुं श्रोतव्यं च श्रुतं त्वया ।  
तदिच्छाम्यभ्यनुज्ञाता त्यक्तमेतत्कलेवरम् ॥  
तेषामिच्छाम्यहं गन्तुं समीपं भावितात्मनाम् ।  
मनीनामाश्रमो येषामहं च परिचारिणी।।  
धैर्मिष्टं तु वचः श्रुत्वा राघवः सहलक्ष्मणः ॥  
प्रहर्षमतुलं लेभे आश्चर्यमिति चाब्रवीत्।।

राम ने प्रसन्न होकर शबरी से कहा कि हे भद्रे, आपने हमारा बड़ा सत्कार किया है। अब आप अपनी इच्छा के अनुसार अपने अभीष्ट लोकों को प्राप्त कीजिए। इस प्रकार राम की आज्ञा प्राप्त करके उसने अग्नि प्रज्वलित की, उसमें अपने अग्नि के समान तेजस्वी शरीर को अर्पित कर दिया तथा दिव्य रूप धारण करके उस प्रदेश को प्रकाशित करती हुई स्वर्ग लोक में चली गई।

शबरी के दिव्यलोक चले जाने पर राम ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा- धर्मात्माओं का प्रभाव अतुलनीय होता है। इसके प्रभाव से पशु-पक्षी आदि सब अपनी विपरीत स्वभाव त्याग करके परस्पर प्रेम-भाव को धारण करते हैं। वाल्मीकि रामायण में राम शबरी का संवाद एवं प्रसङ्ग यहीं पर समाप्त हो जाता है और इसके आगे राम ऋष्यमूक पर्वत की ओर बढ़ जाते हैं।

अध्यात्मरामायण संस्कृत की दूसरी महत्त्वपूर्ण रामकथा है। यह ब्रह्मपुराण के उत्तराखण्ड के अन्तर्गत आती है। अतः इसके रचयिता महर्षि वेदव्यास ही हैं। अध्यात्म रामायण में भी कबन्ध नामक गन्धर्व ही राम को शबरी से परिचित कराता है-

लब्ध्वा वरं स गन्धर्वः प्रयास्यन् राममब्रवीत् ।  
शबर्यास्ते पुरोभागे आश्रमे रघुनन्दन ॥  
भक्त्या त्वत्पादकमले भक्तिमार्गविशारदा ।  
तां प्रयाहि महाभाग सर्वं ते कथयिष्यति ॥

राम गन्धर्व के बताए मार्ग पर चलते हुए शबरी के आश्रम पर पहुंचते हैं। लक्ष्मण के साथ श्री राम को आया हुआ देखकर शबरी हर्षविभोर हो जाती है, उनके चरणों में गिर पड़ती तथा उनका स्वागत अर्घ्य-पाद आदि से करते हुए उनकी कुशलक्षेम पूछती है तथा उनके लिए एकत्र किए गए अमृत तुल्य फलों को भक्तिपूर्वक समर्पित करती है-

त्यक्त्वा तद्विपिनं घोरं सिंहव्याघ्रादिदषितम् ।  
शनैरथाश्रमपदं शबर्या रघुनन्दनः ॥  
शबरी राममालोक्य लक्ष्मणेन समन्वितम् ।  
आयान्तमारांद्दर्शेण प्रत्युत्थायाचिरेण सा ॥

पतित्वा पादयोरग्रे हर्षपूर्णाश्रुलोचना ।  
स्वागतेनाभिनन्द्याथ स्वासने सन्यवेशयत् ॥  
रामलक्ष्मणयोः सम्यक्पादौ प्रक्षाल्य भक्तितः ।  
तज्जलेनाभिषिच्याङ्गमथाध्यादिभिरादृता ॥  
सम्पूज्य विधिवद्रामं ससौमित्रिं सपर्यया ।  
सङ्गृहीतानि दिव्यानि रामार्थं शबरी मुदा ॥  
फलान्यमृतकल्पानि ददौ रामाय भक्तितः ।  
पादौ सम्पूज्य कुसुमैः सुगन्धैः सानुलेपनैः ॥

आदर-सत्कार करने के पश्चात् उन्हें आसन पर बैठाकर शबरी भक्तिपूर्वक उनसे कहती है कि जिन महर्षि की मैं सेवा से सुश्रुषा करती थी, वे ब्रह्मलोक को चले गए और उन्होंने मुझे कहा था कि राक्षसों का नाश करने और ऋषियों की रक्षा के लिए परमात्मा ने दाशरथि राम के रूप में अवतार लिया है। वे शीघ्र ही यहाँ आएंगे। तुम यहाँ एकाग्रचित्त से उनका ध्यान करते हुए रहो। जब तक वे न पधारे तब तक अपने शरीर का पालन करो। उनके कथन अनुसार मैं तभी से मात्र आपका ध्यान करते हुए आपके आने की प्रतीक्षा कर रही हूँ आज मेरे गुरु का वाक्य सफल हो गया है-

बहुवर्षसहस्राणि गतास्ते ब्रह्मणः पदम् ।  
गमिष्यन्तोऽब्रुवन्मां त्वं वसात्रैव समाहिता ॥  
रामो दाशरथिर्जातः परमात्मा सनातनः ।  
राक्षसानां वधार्थाय ऋषीणां रक्षणाय च ॥  
आगमिष्यति सैकाग्र ध्याननिष्ठा स्थिरा भव ।  
इदानीं चित्रकूटाद्रावाश्रमे वसति प्रभुः ॥  
यावदागमनं तस्य तावद्रक्ष कलेवरम् ।  
दृष्ट्वैव राघवं दग्ध्वा देहं यास्यसि तत्पदम् ॥  
तथैवाकरवं राम त्वद्भयानैकपरायणा ।  
प्रतीक्ष्यागमनं तेऽद्य सफलं गुरुभाषितम् ॥

शबरी कहती है कि मेरे गुरु को भी आप का दर्शन नहीं हुआ। मैं हीनजाति में उत्पन्न, मूढ़ स्त्री हूँ तथापि मनवाणी से अगोचर आपके दर्शन मुझे कैसे प्राप्त हो गए। मैं आपकी स्तुति करने में समर्थ नहीं हूँ हे प्रभु आप मुझ पर प्रसन्न हो-

सन्दर्शनं राम गुरूणामपि मे नहि ।  
योषिन्मूढाऽप्रमेयात्मन हीनजातिसमुद्भवा ॥  
तव दासस्य दासानो शतसङ्ख्यां चरस्य वा ।  
दासीत्वे नाधिकारोऽस्ति कुतः साक्षात्तचैव हि ॥  
कथं रामाद्य मे दृष्टृत्वं मनोवागगोचरः ।  
स्तोतुं न जाने देवेश किं करोमि प्रसीद मे ॥

इस पर राम उत्तर देते हुए कहते हैं कि मेरे भजन के लिए नाम, जाति, स्त्री, पुरुष आदि का भेद कोई कारण नहीं है। मेरे भजन का कारण एकमात्र भक्ति है। जो मेरी भक्ति से विमुख है वह दान, यज्ञ, तप, विद्या-अध्ययन आदि किसी भी कर्म से मुझे देख नहीं सकता। इसके पश्चात् वे शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश देते हैं -

पुंस्त्वे स्त्रीत्वे विशेषो वा जातिनामाश्रमादयः ।  
न कारणं मद्भजने भक्तिरेव हि कारणम् ॥  
यज्ञदानतपोभिर्वा वेदाध्ययनकर्मभिः ।  
नैवं द्रष्टृमहं शक्यो मद्भक्तिविमुखैः सदा ॥  
तस्माद्भामिनि सङ्क्षेपाद्भक्ष्येऽहं भक्तिसाधनम् ।

राम शबरी से कहते हैं कि तुम मेरी भक्ति से युक्त हो इसीलिए मैं तुम्हारे पास आया हूँ। अब मेरे दर्शन से निःसन्देह तुम्हारी मुक्ति हो जाएगी।

स्त्रियो वा पुरुषस्यापि तिर्यग्योनिगतस्य वा ।  
भक्तिः सञ्जायते प्रेमलक्षणा शुभलक्षणे ॥  
भक्तौ सञ्जातमात्रायां मत्तत्त्वानुभवस्तदा ।  
ममानुभवसिद्धस्य मुक्तिस्तत्रैव जन्मनि ॥

स्यात्तस्मात्कारणं भक्तिर्माक्षस्येति सुनिश्चितम् ।  
प्रथमं साधनं यस्य भवेत्तस्य क्रमणं तु ॥  
भवेत्सर्वं ततो भक्तिर्मुक्तिरेव सुनिश्चितम् ।  
यस्मान्मद्भक्तियुक्ता त्वं ततोऽहं त्वामुपस्थितः ।  
इतो मद्दर्शनान्मुक्तिस्तव नास्त्यत्र संशयः ।

इसके पश्चात् राम शबरी से सीता के विषय में प्रश्न करते हैं। शबरी सीता तथा के विषय में बताती है तथा सुग्रीव के सहयोग से सीता की प्राप्ति का परामर्श देती है। वह राम से आग्रह करती है जब तक कि मैं अपने शरीर का त्याग करके विष्णु परमधाम को प्राप्त करती हूँ तब तक आप यहीं ठहरिए, मैं आपके सम्मुख ही अग्नि में प्रवेश करना चाहती हूँ। राम से इस प्रकार संभाषण करने के पश्चात् शबरी अग्नि में प्रवेश करके मोक्ष प्राप्त करती है-

अहमग्निं प्रवेक्ष्यामि तवाग्रे रघुनन्दन ॥३९॥  
मुहूर्तं तिष्ठ राजेन्द्र यावद्गृध्वा कलेवरम् ।  
यास्यामि भगवन् राम तव विष्णोः परं पदम् ॥  
इति रामं समामन्त्र्य प्रविवेश हुताशनम् ।  
क्षणान्निधूय सकलमविद्याकृतबन्धनम् ।  
रामप्रसादाच्छबरी मोक्षं प्रापातिदुर्लभम् ॥

कम्बरामायण 10,000 श्लोकों का महाकाव्य है, यह छह काण्डों में विभक्त है। इसकी रचना चक्रवर्ती कवि की उपाधि से विभूषित तमिल कवि कम्बन के द्वारा की गई है। विद्वानों ने कम्बन का समय नवी शताब्दी से 12वीं शताब्दी मध्य माना है। तमिल भाषा में रचित होने के कारण मेरे द्वारा मूल ग्रन्थ से अनूदित कम्बरामायण को ग्रहण किया गया है। राष्ट्रभाषा परिषद पटना, बिहार से प्रकाशित इस ग्रन्थ के अनुवादक श्री एन सी राजगोपालन हैं। कम्बरामायण के अरण्यकाण्ड में शबरी मुक्ति पटल नामक अध्याय में शबरी-राम संवाद का वर्णन प्राप्त होता है। इसके पूर्व के कबन्ध पटल में राक्षसरूप धारी गन्धर्व का वध वर्णित है जो अपनी मुक्ति के पश्चात् राम को सीता-अन्वेषण के कार्य को सिद्ध करने के उपाय को जानने के लिए वह उन्हें प्राणियों के लिए माता तुल्य शबरी के पास जाने का परमर्श देता है।

उसके कथनानुसार ही राम दक्षिण दिशा की ओर चलकर पर्वतों और अरण्यों को पार करते हुए मतङ्ग ऋषि के आश्रम में पहुँचे। मतङ्ग ऋषि के आश्रम का वर्णन करते हुए कम्बरामायण में उसे स्वर्ग लोक के समान कहा गया है। इसी आश्रम में शबरी राम का ध्यान करती हुई तपस्यारत थी राम ने उसके निकट पहुँच कर प्रश्न किया- तुम सुख से तो होना।

इस समय शबरी ने बड़ी भक्ति से राम की स्तुति की और आंखों से अशुद्ध धाराएं बहाते हुए कहा कि अब मेरा माया से युक्त यह सांसारिक बंधन टूट गया। मैं चिरकाल से जो तपस्या करती रही हूँ उसका फल प्राप्त हुआ। मेरा जन्म का सङ्कट समाप्त हो गया। यह कह कर उसने बड़े प्रेम से एकत्र किए हुए फल कन्द आदि लाकर के राम-लक्ष्मण को भोजन कराया। शबरी ने राम से कहा- हे प्रभु, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवता यहां आए थे और उन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हारी पवित्र तपस्या का सिद्धिकाल आ गया है। तुम यहाँ कुछ दिन और रहो। जब राम यहाँ आएंगे तो उनका सत्कार करने के पश्चात् हमारे लोकों में आ जाना। आपके आने से आज मेरा सुकृत सफल हो गया है। राम ने उस तपस्विनी के प्रेम को देखकर के कहा है- माता, आपने हमारे मार्गगमन के श्रम को दूर किया है। आपका कल्याण हो। कम्बरामायण में वर्णित है कि राम-लक्ष्मण वहाँ कुछ दिन रहे। शबरी ने उन्हें सुग्रीव के स्थान के विषय में बताया। इसके पश्चात् शबरी अपनी तपस्या के प्रभाव से इस देह को त्याग करके अनुपम मोक्ष लोक में आनन्दपूर्वक पहुँच गई। कृतिवास रामायण में शबरी का प्रसङ्ग अत्यन्त सङ्क्षेप में वर्णित है।

बांग्ला भाषा की यह रामायण बङ्गाल के सन्त कवि कृतिबास रचित है। कृतिबास रामायण बङ्गभाषियों में उतनी ही लोकप्रिय है जितनी हिन्दीभाषियों में रामचरितमानस। इसका नन्दकुमार अवस्थी ने पद्यानुवाद किया है जो प्रकाशन भवन, लखनऊ से प्रकाशित है। इसी अनुदित संस्करण का इस लेख में उपयोग किया गया है। कबन्ध का उद्धार करने के पश्चात् राम और लक्ष्मण पम्पा सरोवर के समीप स्थित मतङ्ग मुनि के आश्रम के समीप पहुंचते हैं। जहाँ उन्हें शबरी के दर्शन होते हैं।

**विगत रैन रवि उदित छवि सहित लखन रघुवीर ।**

**पहुँचे सरित सहावनी सलिला पम्पा तीरा॥**

**सहित विहंगिनि केलि विहंगा। चिर बिहार जहँ मृगी-कुर्गा ॥**

**राजहंस - हंसिन जल - क्रीड़ा । निरखि राम अतिशय मन पीड़ा॥**

**खग मृग टेरि कहत विधि एही। शशिमुखि कतहुँ लखी वैदेही॥**

**मज्जन तर्पन - पम्पा तीरा । शोध - सुकण्ठ चले रघुबीरा॥**

**चलि मतङ्गमुनि - आश्रम आये । दरस तहाँ शबरी के पाये न।**

शबरी नेत्रों में प्रेमाश्रु भरकर उनकी कुशल पूछती है और कहती है कि बहुत दिनों तक मैं मतङ्ग मुनि की पद सेवा की है और अन्त में वह मुनि मुझे यह कह कर गए कि तुम इस आश्रम में निवास करो जहाँ एक दिन राम आएंगे उनके दर्शन करके तुम्हारी समस्त पाप नष्ट हो जाएंगे। अब मैं आपके दर्शन कर लिए हैं अब अब आप मुझे अपने धाम में स्थान दे यह कहकर वह अग्नि में प्रवेश करती है और राम की कृपा से बैकुण्ठ को प्राप्त होती है-

**नयन नेह - जल भरत अपेसा रामहिं कहेउ यथा आदेसा॥**

**बहु दिन मुनि मतङ्ग-पद सेवा। अन्त गये सुरपुर सुनिदेवा॥**

**मुनि के बचन - आश्रम वास । दिवस एक जहँ राम निवासू ॥**

**दरस मिलें जब नलिनि-विलोचन ।**

**शबरी ! तब तत्र पाप-विमोचन॥**

**राम - राम रघुपति श्रीरामा । दासिहि सद्य लेहु निज धामा॥**

**शुद्ध काठ बहु, चिता सजाई। शबरी पुनि तहँ अनल जराई॥**

**कौन प्रवेश राम, मन धारी तेहि। साहस प्रभु विस्मय भारी ॥**

**दहकि शरीर भयेउ जरि कागी । अहह! धन्य शबरी बहुभागी॥**

**जासु अस्मरन मंगल नामा। मुक्ति दैन पावन हरिधामा॥**

**सो प्रतच्छ पुनि दरसन पाई। शबरी-गतिप्रभु स्वयं बनाई॥**

**राम प्रसाद पाप तेहि नासू । अनायास बैकुण्ठ निवासू ॥**

**राम-चरित-घट-सुधा सौ, लहि अरण्य सुख-खानि ।**

**किष्किन्धा गाथा कहत, कवि कृतिवास बखानि॥**

तेलुगू रामायण में इस संवाद पर दृष्टिपात करने पर कुछ भिन्नता प्राप्त होती है। रंगनाथ रामायण के नाम से विख्यात यह अपनी सरल, प्रवाहपूर्ण शैली के कारण विद्वानों और लोक दोनों में समान रूप से समादृत है। इसकी रचना गोनबुद्ध राजा ने की है जिसका उल्लेख इस ग्रन्थ के आरम्भ में मिलता है। इस रामायण की रचना उस समय में प्रचलित राम कथा के आधार पर हुई है जो संस्कृत रामायण से कई स्थानों में भिन्न है। रंगनाथ रामायण में भी शबरीवृत्तान्त अरण्यकाण्ड के अन्तिम भाग में वर्णित है।

यहाँ पर जो राम को शबरी विषय में बताता है वह दनु है जिसे पूर्व में स्वर्ग प्राप्त था। वह शाप के कारण राक्षस बन गया था। वह बताता है कि पम्पा के आस-पास श्रेष्ठ ज्ञानी मतङ्ग मुनि का आश्रम है, उनकी शिष्या शबरी आपका आदर-सत्कार करेगी। उस स्त्री के निवास के पास यदि आप जायें, तो सूर्यपुत्र से आपकी मित्रता होगी, जिसकी सहायता से आप जानकी को प्राप्त कर सकेंगे और साम्राज्य का लाभ भी करेंगे। इस प्रकार कहकर वह स्वर्ग चला गया। राम पम्पा सरोवर के पश्चिम भाग में स्थित तरु-लता-समूह से विलसित, प्रबल पुण्यों का आवास शबरी के आश्रम-स्थल में पहुँचे। शबरी ने भक्तिपूर्वक राम के चरणों पर गिरकर

साष्टांग प्रणाम किया और उनकी पुनः-पुनः स्तुति करते हुए उनसे कहा - हे रघुराम, मैं आज आपके दर्शन कर सकी। मेरी तपस्या आज सफल हुई। मैंने अद्वितीय पुण्यों को प्राप्त किया। हे काकुत्स्थ, मार्ग के श्रम से आप बहुत थक गए होंगे, कहीं और न जाकर आज हमारे आश्रम में ठहर जाइए। मैंने अपने गुरु मतङ्ग मुनि के द्वारा आपका वृत्तान्त सुना है। आप आदिदेव हैं, सर्वनिगमवेद्य हैं, आपकी स्तुति करना असम्भव है। यह मतङ्ग मुनीन्द्र का आश्रम है; तपश्चर्या से परिपूर्ण तथा विश्रामदायक है। इन प्रकार (उम आश्रम का) महत्त्व बताकर उसने बड़े प्रेम से वन के कन्द, मूल, फल ले जाकर उन्हें दिये। राम ने उन फलों को खाया। राम उस रात को वहीं ठहर गये और दूसरे दिन शबरी को देखकर बोले-'सीता की वियोगाग्नि से मैं अत्यन्त व्याकुल हूँ, एक स्थान पर ठहर नहीं पा रहा हूँ; अब मुझे सीता की खोज के निमित्त जाना है। कृपया आप मुझे आज्ञा दें। तब शबरी बोली- 'दनु नामक देवता ने आपको भविष्य में करने योग्य सभी विषयों को कहा ही है। फिर भी मैं कहूँगी। हे राजन्, आप अवश्य ही रावण का वध करेंगे और सीता को प्राप्त करेंगे। इसमें सन्देह करने की कोई आवश्यकता नहीं है। फिर भी आप अकेले मत जाइए। यहाँ से आप ऋष्यमूक पर्वत के निकट जाइए। उम पर्वत पर तीक्ष्ण बुद्धिवाले, सूर्य-पुत्र सुग्रीव नामक वानर राजा रहता है। वह अपने अग्रज के हाथों अपना राज्य तथा अपनी स्त्री को खो चुका है। आप उसका उपकार कीजिए जिससे उसके मन में आपके प्रति विश्वास उत्पन्न हो जाय। उसके पश्चात् आप उनके साथ लड़का जाइए और अतिशक्तिशाली रावण को युद्ध में मारकर अपने बलविक्रम की ख्याति चारों ओर फैलाते हुए अपनी स्त्री सीता को प्राप्त कीजिए।

इस प्रकार शबरी ने उन्हें भविष्य में करने योग्य सभी कार्य बतलाकर अपने गुरु के वचनों का स्मरण किया। अग्नि में अपना शरीर भस्म करके दिव्य विमान पर आरूढ हो दिव्यलोक को चली गई।

**निष्कर्ष(Conclusion)-**

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि वाल्मीकि रामायण में शबरी और राम संवाद में शबरी का चित्रण एक सिद्धा, अनन्य तपस्विनी, ज्ञानवती, विज्ञान में अबहिष्कृत, धर्म और कर्म और भक्ति के मर्म को जानने वाली, अपने गुरुजनों में पूर्ण आस्था रखने वाली श्रमणी के रूप में किया गया है। वह गुरुजनों के वचनों के अनुसार चिरकाल तक राम की प्रतीक्षा करती है। उसने गुरुजनों के द्वारा लगाए गए वन की निष्ठापूर्वक रक्षा की है। यहाँ पर राम उसके तप से प्रभावित होते हैं, उसकी तपोधने कहकर सम्बोधित भी करते हैं। उसने राम की प्रतीक्षा में बहुत सारे फलों को चुन-चुन कर एकत्र किया हुआ है और उन्हीं से वह उनका आदर सत्कार करती है। वाल्मीकि रामायण में राम के ईश्वर रूप में होने के विशेष वर्णन प्राप्त नहीं होता। अध्यात्म रामायण में शबरी एक विज्ञानवती तपस्विनी की अपेक्षा एक भक्त अधिक है। शबरी भक्त और राम भक्तवत्सल के रूप में हैं। उसे भक्ति के कारण ही राम के दर्शन प्राप्त हुए हैं जो उसके गुरु भी प्राप्त नहीं कर सके-

**पुंस्त्वे स्त्रीत्वे विशेषो वा जातिनामाश्रमादयः ।**

**न कारणं मद्भजने भक्तिरेव हि कारणम् ॥**

**यज्ञदानतपोभिर्वा वेदाध्ययनकर्मभिः ।**

**नैवं द्रष्टुमहं शक्यो मद्भक्तिविमुखैः सदा॥**

यहाँ राम का चित्रण परमात्मा के रूप में है-रामो दाशरथिर्जातः परमात्मा सनातनः । इस रामायण में मतङ्गवन का वर्णन नहीं है।

कम्बरामायण में शबरी संवाद वाले अध्याय का नाम शबरीमुक्तिपटल रखा गया है जिससे ज्ञात होता है कि राम का वर्णन परमात्मा के रूप में अपेक्षित है। यहाँ पर भी शबरी में ज्ञान की अपेक्षा भक्ति का आधिक्य है। वह राम को देखकर भाव-विभोर हो आंखों से अशुद्ध धाराएँ बहाते हुए बड़ी भक्ति से उनकी स्तुति करती है।

कृतिवास रामायण में यह प्रसङ्ग अत्यन्त सङ्क्षेप में वर्णित है। यहाँ शबरी, मतङ्गवन आदि का विशेष वर्णन नहीं किया है। शबरी राम के दर्शन करके अपने शरीर को त्याग देखकर मुक्ति प्राप्त कर लेती है। रंगनाथ रामायण में इस संवाद में कुछ भिन्नता प्राप्त होती है। यहाँ शबरी के विषय में दनु नामक राक्षस बताता है जो शापभ्रष्ट देव है। इस तेलुगु रामायण में मतङ्गकृषि के आश्रम का सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है। इसमें भी शबरी का भाव-विभोर भक्त का रूप ही प्रमुखता से चित्रित है। उत्तर भारत की अत्यधिक प्रसिद्ध रामचरितमानस के राम-शबरीसंवाद पर अध्यात्म रामायण की स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। अध्यात्मरामायण की अपेक्षा तुलसी की शबरी भक्तिभाव में और भी अधिक डूबी हुई है। यहाँ पर भी शबरी को राम नवधा भक्ति का उपदेश देते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सभी रामायणों में शबरी- राम-संवाद प्राप्त तो होता है परन्तु उनमें परस्पर भिन्नता भी है। इस पर चिन्तकों, समीक्षकों तथा कवियों की अपनी-अपनी दृष्टि रही है। इसमें आई भिन्नता उनकी दृष्टि एवं आस्था के परिचायक हैं। परवर्ती कवियों ने इसको अपनी मौलिक प्रतिभा द्वारा देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्द्धित एवं परिष्कृत करके राम की लोकोत्तरता तथा उनके वैष्णव रूप को अधिक स्पष्ट एवं प्रासङ्गिक बनाने का प्रयास किया है।

इस संवाद में एक और अत्यधिक रोचक प्रसङ्ग है वह है शबरी के द्वारा कन्दमूल-फल का समर्पण। इस शोधपत्र में जिन रामायणों का अध्ययन किया गया। उन सभी में शबरी श्रद्धा और प्रेमपूर्वक चुनकर रखे गए कन्दमूल फलों का राम को समर्पित करती है। परन्तु कहीं पर भी चखकर झूठे बेर खिलाने का प्रसङ्ग प्राप्त नहीं होता। कृतिवास रामायण में तो फल प्रदान करने का प्रसङ्ग ही नहीं। प्रोफेसर राधा वल्लभ त्रिपाठी ने रामायण में शबरी प्रसंग : एक परिचर्चा में कथावाचस्पति की उपाधि से विभूषित कथावाचक राधेश्याम का उल्लेख किया है जिन्होंने सरसागर का संदर्भ देते हुए शबरी द्वारा झूठे बेर खिलाए जाने का उल्लेख किया है। यह झूठे बेर का प्रसङ्ग कहां से आ गया इसके विषय में कहना कठिन है। सम्भवतः राम के भक्तवत्सल स्वरूप को और निखारने और भक्तों में जाति-धर्म-योनि आदि का कोई भेदभाव नहीं होता है इस तथ्य की स्थापना करने के लिए इसे रामकथाओं में संयुक्त किया गया। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि सभी रामायणों में वर्णित राम-शबरी संवाद में कथानक मूलरूप से समान है जिसमें राम के पतितपावन लोकोत्तर चरित को ही रेखांकित किया है। देशकाल और दृष्टिकोण के प्रभाव से इसमें कुछ भिन्नता आ गई है जो अत्यन्त स्वाभाविक है।

\*\*\*\*\*

### सन्दर्भ (References)

1. शब्दकल्पद्रुम
2. वाल्मीकि रामायण. अरण्यकाण्ड 73/23.25
3. वही. अरण्यकाण्ड 74/1.5
4. तौ दृष्ट्वा तु तदा सिद्धा समुत्थाय कृताञ्जलिः। पादौ जग्राह रामस्य लक्ष्मणस्य च धीमतः॥  
पाद्यमाचमनीयं च सर्वं प्रादाद यथाविधि। तामुवाच ततो रामः श्रमणी धर्मसंस्थिताम्॥ वही. अरण्यकाण्ड 74/6,7
5. वही. 74/ 8,9
6. वही. 74/10.16
7. वही. 74/17,18
8. वही. 74/19.30
9. तामुवाच ततो रामः शबरी संशितव्रताम् । अर्चितोऽहं त्वया भक्त्या गच्छ कामं यथासुखम्॥ इत्युक्ता जटिला वृद्धा चीरकृष्णाजिनाम्बरा । तस्मिन्मुहूर्ते शबरी देहं जीर्णं जिहासती ॥  
अनुज्ञाता तु रामेण हुत्वाऽऽत्मानं हुताशने । ज्वलत्पावकसंकाशा स्वर्गमेव जगाम सा ॥ दिव्याभरणसयुक्ता दिव्यमाल्यानुलेपना । दिव्याम्बरधरा तत्र बभूव प्रियदर्शना॥ विराजयन्ती तं देशं विद्युत्सौदामिनी यथा ॥ यत्र

- ते सुकृतात्मानो विहरन्ति महर्षयः ॥  
तत्पुण्यं शबरीस्थानं जगात्समाधिना॥ वही. 74ध 31.35
10. अध्यात्मरामायण अरण्यकाण्ड दशम सर्ग 1ए2
  11. वही. 4.9
  12. वही. 12.16
  13. वही. 17.19
  14. सतां सङ्गतिरेवात्र साधनं प्रथमं स्मृतम् ॥  
द्वितीयं मत्कथालापस्तृतीयं मद्गुरुरणम् । व्याख्यातृत्वं मद्ब्रह्मसां चतुर्थं साधनं भवेत् ॥  
आचार्योपासनं भद्रे मद्ब्रह्मसांभारयया सदा । पञ्चमं पुण्यशीलत्वं यमादि नियमादि च ॥  
निष्ठा मत्पूजने नित्यं षष्ठे साधनमीरितम् । मम मन्त्रोपासकत्वं साङ्गं सप्तममुच्यते ॥  
मद्भक्तेष्वधिका पूजा सर्वभूतेषु मन्मतिः । बाह्यार्थेषु विरागित्वं शमादिसहितं तथा ॥  
अष्टमं नवमं तत्त्वविचारो मम भामिनि । एवं नवविधा भक्तिः साधनं यस्य कस्य वा ॥ वही. 22.27
  15. वही. 20.22
  16. वही. 28.31
  17. यदि जानासि मे ब्रूहि सीता कमललोचना ॥३२॥ कुत्रास्ते केन वा नीता प्रिया मे प्रियदर्शना ॥  
जानासि सर्वज्ञ सर्वे त्वं विश्वभावन । तथाऽपि पृच्छसे यन्मां लोकाननुसृतः प्रभो ॥  
ततोऽहमभिधास्यामि सीता यत्राधुना स्थिता । रावणेन हता सीता लङ्कायां वर्ततेऽधुना ॥  
इतः समीपे रामास्ते पम्पानाम सरोवरम् । ऋष्यमूकगिरिर्नाम तत्समीपे महानगः दृष्टं चतुर्भिर्मन्त्रिभिः सार्धं सुग्रीवो वानराधिपः । भीतभीतः सदा यत्र तिष्ठत्यतुलविक्रमः दृष्टं वालिनश्च भयाद्भ्रातृस्तदगम्यमुषेर्भयात् । बालिनस्तत्र गच्छ त्वं तेन सख्यं कुरु प्रभो ॥  
सुग्रीवेण स सर्वं ते कार्यं सम्पादयिष्यति । वही. 33.38
  18. वही. 39.41
  19. कम्बामायण अध्याय 12
  20. कृतिवास रामायण अरण्यकाण्ड दोहा 53
  21. वही दोहा 54
  22. हे दशरथ के वरपुत्रए ताडकाविजयीए कौशिक के यज्ञ के रक्षकए मुनियों के ध्येयए ताडकापुत्रों को दण्ड देनेवालेए परमपवित्र गङ्गानदी के तट पर पैदल चलनेवालेए निर्मल पद. रजवालेए अहल्या के उद्धारकए हर के प्रचण्ड तथा विशाल कोदण्ड को भङ्ग करनेवालेए भयकर भागवराज का गर्व तोडनेवालेए अभिराम नामवालेए पितृ. वचन का पालन करने वालेए सत्कीर्तिवालेए विराध के कुकर्मों को रोकनेवालेए सफल मुनित्राताए सत्यसपन्नए खर. दूषणादि राक्षसों का शिरच्छेदन करनेवालेए मारीच का वध करनेवालेए सीता. वियोग. जनितै मोह से अभिभूत होनेवालेए खगेन्द्र को मोक्ष प्रदान करनेवालेए महान् विक्रम के धामए अति पुण्यप्रद नामवाले... 23.  
रङ्गनाथ रामायण अध्याय 27
  24. रङ्गनाथ रामायण अध्याय 27
  25. अध्यात्मरामायण अरण्यकाण्ड दशम सर्ग 1ए2  
स्याम गौर सुंदर दोड भाई। सबरी परी चरन लपटाई॥  
प्रेममगन मुख वचन न आवा। पुनि पुनि पदसरोज सिर नावा।  
सादर जल लै चरन पखारै। पुनि सुंदर आसन बैठारै।  
कंदमूलफल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि। प्रेम सहित प्रभु खायेए बारंबार बखानि।  
रामचरितमानसए अरण्यकाण्ड दोहा 33
  26. रामचरितमानसए अरण्यकाण्ड दोहा 35.36
  27. <https://www.pashyantee.com/category/radhavallabh-tripathi/>
  28. भिलनी इस तरह मिली इनसे जिस तरह धर्म धर्मात्मा से या यों कहिये इस तरह मिली जीवात्मा ज्यों परमात्मा से॥  
सुंदर पत्तों ते आसन पर अपने प्रभु को बैठाती है  
महमानी के कुछ बेरों को डलिया में भर कर लाती है  
वे फल शबरी के जूठे थे ;यह लिखा सूर सागर में है॥  
हम भी कहते हैं जो कुछ है सब प्रेम और आदर में है।